CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूर्यकुण्ड की महिमा

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिसर्वस्व त्रिविक्रम महाराज

सूर्यनारायण मन्दिर

सूर्य कुण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीश्रीगुरु-गौरांगौ-जयतः

सूर्यकुण्ड की महिमा

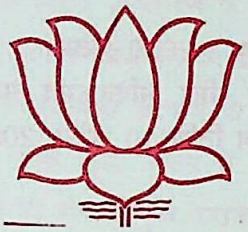

भारतव्यापी श्रीचैतन्य आश्रम के प्रतिष्ठाता
ॐविष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिकुमुद
सन्त गोस्वामी महाराजजी के चरणाश्रित

॥|॥

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिसर्वस्व त्रिविक्रम
महाराज द्वारा संग्रहीत

सम्पादक
ओमप्रकाश ब्रजवासी
एम.ए., एल.एल.बी., साहित्यरत्न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- प्रकाशक :
  त्रिदण्डिस्वामी भक्तिसर्वस्व त्रिविक्रम महाराज

- प्रथम संस्करण : 2000 प्रतियां
  गुरुपादपद्म श्रील भक्तिकुमुद सन्त गोस्वामी महाराज की आविर्भाव तिथि 10 अप्रैल, 2004

- न्यौछावर : 20/- रु.

- प्राप्ति स्थान :
  1. श्रीसूर्यनारायण मन्दिर (सूर्यकुण्ड)
     श्रीसन्त गोस्वामी गौड़ीय सेवाश्रम
     ग्राम-छोटा भरना, पो. भरना कलां,
     जिला-मथुरा।
     फोन : 05662-253243

  2. विनोद वाणी गौड़ीय मठ
     32, कालीयदह, वृन्दावन
     फोन : 2443661

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निवेदन

जीवमात्र स्वरूपगत भगवान का नित्यदास है। वह अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर अनादिकाल से भगवान से विमुख होकर नानाप्रकार के क्लेशों के कारण जन्ममरण के चक्कर में पड़ा हुआ है। परमकरुणालय स्वयं भगवान ब्रजेन्द्रनन्दन इस जगत में आविर्भूत होकर और कभी स्वयं प्रभावशाली आचार्य के रूप में प्रकट होकर विमुख जीवों को पुनः उनके शुद्ध स्वरूप में प्रतिष्ठित कराने का प्रयत्न करते हैं। भगवान की ओर उन्मुख कराने के जितने भी उपाय या साधन हैं उनमें भगवद्भक्ति ही सर्वप्रधान एवं चरम साधन है।

कलियुग पावनावतारी भगवान श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी की अनुकम्पा से उन्हीं के चरणानुचर जगद्गुरु श्रील रूपगोस्वामी और श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी आदि गौड़ीय वैष्णवाचार्यों के चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ। श्रीचैतन्य चरितामृत के रचयिता श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीपाद ने ब्रजभूमि के एक-एक गांव एवं वृक्षलताओं के आश्रय में भजनशील रहकर श्रीराधागोविन्दजी की कृपा प्राप्त करके अष्टकालीय लीला स्मरण के द्वारा श्रीगोविन्दलीलामृत ग्रन्थ की रचना की है।

अनेक शास्त्रीय प्रमाण एवं अनुभूति के द्वारा हरिभक्तों को उनके भजन में मार्गदर्शन प्रदान किया है। इसी रूपानुग गुरुपरम्परा में नित्यलीला प्रविष्ट जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद रूपानुगवर श्रीमद् भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद के चरणाश्रित ॐविष्णुपाद परमहंस अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिकुमुद सन्त गोस्वामी गुरुपादपद्म की अहैतु की कृपा से आज सूर्यकुण्ड में वृषभानुनन्दिनी रासेश्वरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राधारानी के द्वारा सेवित श्रीसूर्यनारायण के विग्रह की सेवा सुन्दर रूप से चल रही है।

गुरुपादपद्‌म की मनोभीष्ट भगवद्‌वाणी का विशद् रूप से प्रचार हो, इस महती कार्य के लिए श्रीसूर्यनारायण तथा सूर्यकुण्ड की महिमा का वर्णन करने के लिए भक्तिबुद्धिहीन यह अधम इस सेवाकार्य में अग्रसर हो रहा है। हिन्दी भाषा का अभाव होने के कारण विद्वत पाठक वर्ग को प्रस्तुत ग्रन्थ को पढ़ने व समझने में असुविधा अवश्य होगी; परन्तु विश्वास है कि वे ग्रन्थ का भाव ग्रहण कर लाभान्वित होंगे।

श्री हरि-गुरु-वैष्णवों की नित्य सेवा प्राप्ति की इच्छा से श्रीगौरहरि तथा परमाराध्य भगवत्सेवा अधिकार एवं सम्बन्धित ज्ञानप्रदाता श्रीगुरुपादपद्‌म ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिकुमुद सन्त गोस्वामी महाराज के करकमलों में यह ग्रन्थ समर्पित कर रहा हूँ।

मेरे गुरुभ्राता श्रीभक्तिसर्वस्व न्यासी महाराज, श्रीसत्यकृष्णदास ब्रह्मचारी और श्रीबलभद्र दास प्रभु के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जो सूर्यनारायण के मन्दिर की सेवा में निष्ठापूर्वक संलग्न हैं।

विनोदवाणी गौड़ीय मठ, वृन्दावन के मठरक्षक पूज्यपाद भक्तिविकास गोविन्द महाराज एवं गोविन्दकुण्ड के पूज्यपाद श्री मथुरानाथदास बाबाजी महाराज ने मुझे इस ग्रन्थ को लिखने की प्रेरणा देकर तन, मन वचन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। मैं इनके श्रीचरणों में सदैव कृतज्ञ रहूँगा।

पूज्यपाद श्रील भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज के परमकृपा पात्र श्रीपाद संकर्षण दास ब्रह्मचारी का विशेष धन्यवाद, आभार एवं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने श्री सूर्यनारायण मन्दिर के जीर्णोद्धार और सन्त सेवक खण्ड के भवन निर्माण के व्यय भार का सम्पूर्ण दायित्व सहर्षपूर्वक ग्रहण किया है। श्रीमती राधारानी इन पर प्रचुर कृपाशीर्वाद वर्षण करें, यह मेरी प्रार्थना है।

श्रीमाधव गोस्वामी गौड़ीय मठ, गोवर्धन के प्रतिष्ठाता श्रीपाद शिवानन्द ब्रह्मचारी का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मन्दिर के जीर्णोद्धार कार्य में निष्ठापूर्वक सहयोग प्रदान किया है।

अन्त में श्रीसूर्यनारायण मन्दिर में अखण्ड प्रज्ज्वलित दीप और प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन श्री अमर चौहान के आर्थिक सहयोग से किया गया है, इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। श्रीमती राधारानी इन पर प्रचुर कृपावर्षण करें।

त्रिदण्डिभिक्षु भक्तिसर्वस्व त्रिविक्रम

सूर्यकुण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

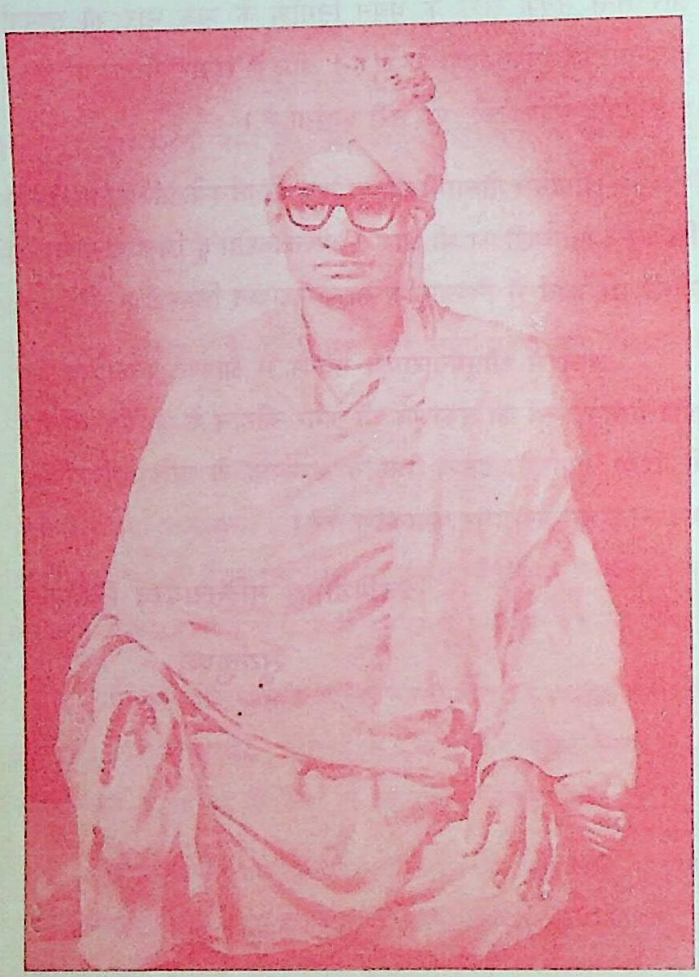

विष्णुपाद श्रीलभक्तिकुमुद
सन्त गोस्वामी महाराज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मंगलाचरण

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपद-कमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण-रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजन सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवम्
श्रीराधाकृष्ण-पादान् सहगण-ललिता-श्रीविशाखान्वितांश्च ॥१॥

श्रीगुरु-प्रणामः

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
नमः ॐ विष्णुपादाय गौरप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिकुमुद सन्त गोस्वामि इति नामिने ॥२॥

श्रील प्रभुपाद-वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण-प्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त-सरस्वतीति-नामिने॥
श्रीवार्षभानवी-देवी-दयिताय कृपाब्धये।
कृष्ण-सम्बन्ध-विज्ञान-दायिने प्रभवे नमः॥
माधुर्य्योज्ज्वल-प्रेमाढ्य-श्रीरूपानुग-भक्तिद।
श्रीगौर-करुणा-शक्ति-विग्रहाय नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते गौर-वाणी-श्रीमूर्तये दीन-तारिणे।
रूपानुग-विरुद्धाऽपसिद्धान्त-ध्वान्त-हारिणे ॥३॥

श्रील गौरकिशोर-वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्य मूर्त्तये।
विप्रलम्भ-रसाम्भोधे! पादाम्बुजाय ते नमः॥४॥

श्रील भक्तिविनोद-वन्दना

नमो भक्ति-विनोदाय सच्चिदानन्द-नामिने।
गौर-शक्ति-स्वरूपाय रूपानुग-वराय ते॥५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रील जगन्नाथ-वन्दना

गौराविर्भाव-भूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जन-प्रियः।
वैष्णव-सार्वभौम-श्रीजगन्नाथाय ते नमः ॥६॥

श्रीवैष्णव-वन्दना

वांछा-कल्पतरुभ्यश्च कृपा-सिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥७॥

श्रीमन्महाप्रभु-वन्दना

नमो महावदान्याय कृष्ण - प्रेम-प्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्ण-चैतन्य-नाम्ने गौरत्विषे नमः ॥८॥

श्रीकृष्ण-प्रणामः

हे कृष्ण! करुणासिन्धो! दीनबन्धो! जगत्पते!।
गोपेश! गोपिकाकान्त! राधाकान्त! नमोऽस्तु ते ॥९॥

श्रीराधा-प्रणामः

तप्तकाञ्चनगौराङ्गि! राधे वृन्दावनेश्वरि!।
वृषभानुसुते! देवि! प्रणमामि हरिप्रिये! ॥१०॥

श्रीसम्बन्धाधिदेव-प्रणामः

जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्द-मतेर्गती।
मत्सर्वस्व पदाम्भोजौ राधा-मदनमोहनौ ॥११॥

श्रीअभिधेयाधिदेव-प्रणामः

दीव्यद्-वृन्दारण्य-कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार-सिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा-श्रीलगोविन्द-देवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥१२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीप्रयोजनाधिदेव-प्रणामः

श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवट-तटस्थितः।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः ॥१३॥

श्रीतुलसी-प्रणामः

वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्य च।
कृष्णभक्ति-प्रदे देवि! सत्यवत्यै नमो नमः ॥१४॥

श्रीपञ्चतत्त्व-प्रणामः

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्॥
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुनित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि- गौरभक्तवृन्द॥१५॥

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

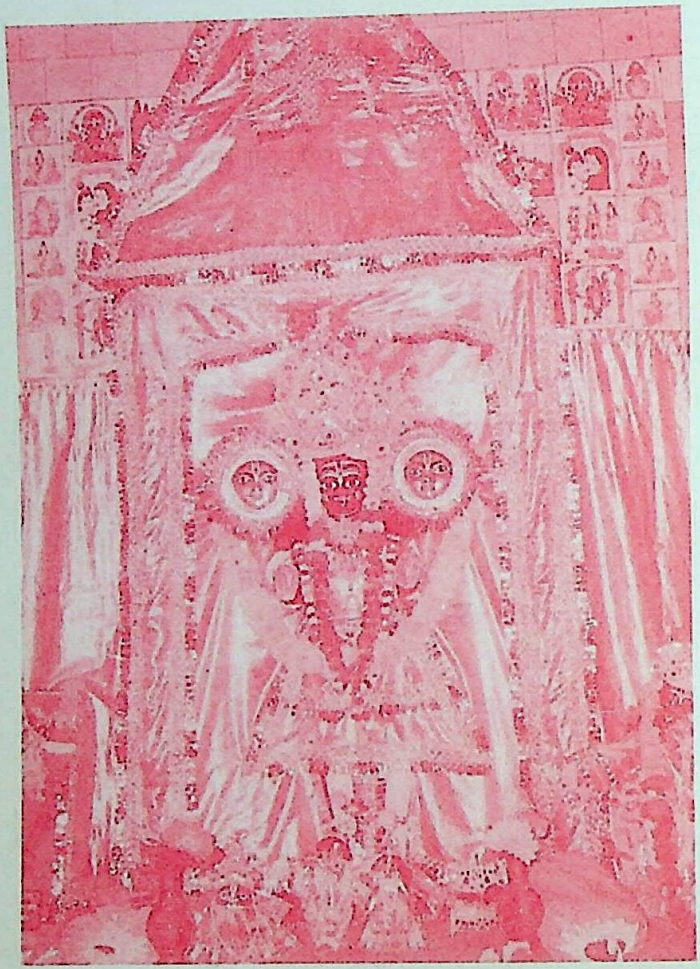

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूर्यकुण्ड माहात्म्य

मध्याह्न लीला

सूर्यकुण्ड श्रीमती राधारानी एवं भगवान श्रीकृष्ण की मध्याह्न लीला का स्थल है। राधारानी अपनी सखियों के साथ सूर्य-पूजा के बहाने यहाँ आती थीं एवं सूर्योपासना करती थीं। दूसरी ओर, भगवान कृष्ण भी पुरोहित बनकर मधुमंगल के साथ सूर्यदेव की पूजा कराते थे। यह लीला दिन के तृतीय प्रहर में संपादित होती है।

इसी स्थान पर भगवान कृष्ण ने राधारानी को सूर्यनारायण के रूप में दर्शन दिया। राधारानी ने भगवान से वर माँगा, "हे प्रभु! आप यदि इसी रूप में यहाँ विराजमान रहेंगे, तो मैं प्रतिदिन आपकी सेवा किया करूँगी।" भगवान कृष्ण संतुष्ट होकर वहीं पर भव्य सूर्यनारायण के विग्रह के रूप में विराजमान हो गये एवं राधारानी की सेवा स्वीकार करने लगे। यही श्रीविग्रह आज भी सूर्य-कुण्ड में सेवित हैं एवं दूर-दूर से आये दर्शनार्थी श्रद्धालु भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान करने वाले हैं। सूर्य-कुण्ड के बगल में ही श्रील मधुसूदन दास बाबाजी महाराज (सिद्ध बाबा) की भजन-स्थली व समाधि है। यहीं पर उन्हें राधारानी ने दर्शन देकर प्रस्तर-खण्ड में अपना मुकुट-चिन्ह प्रदान किया था, जो आज भी दर्शनीय है।

डोल-वंशिहरण सूर्यपूजादि

मध्याह्नेऽन्योन्य-संगोदित-विविध-विकारादि-भूषा-प्रमुग्धौ
वाम्योत्कण्ठातिलोलौ स्मरमख-ललिताद्यालि-नर्माप्तशातौ।
दोलारण्यास्तु-वंशीहृति - रति - मधुपानार्क-पूजादि-लीलौ
राधाकृष्णौ सतृष्णौ परिजन-घटया सेव्यमानौ स्मरामि ॥१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो दोपहर के समय एक दूसरे से मिलने पर अष्टसात्त्विक विकार और निर्वेद, आवेग आदि भावों से अलंकृत होकर शोभा को प्राप्त होते हैं, जो वाम्यभाव और उत्कण्ठा से भरपूर हैं, रतिक्रीड़ा-विषय में ललिता आदि सखियों के द्वारा उपहास वाक्य सुनकर सुख का अनुभव करते हैं; और दोललीला, अरण्यलीला, जलक्रीड़ा, वंशीहरण, रमण, मधुपान और सूर्यपूजा आदि लीलाओं में तत्पर एवं परिजनों से सेवित होते हैं, मैं उन श्रीराधाकृष्ण का अपने हृदय में ध्यान करता हूँ।

वृषभानुनन्दिनी अपनी सास जटिला, नन्द कुटिला, अष्टसखियां तथा कुंदलता आदि के साथ श्रीसूर्यदेव की पूजा के छल से श्रीकृष्ण से मिलने के लिए चल पड़ीं। उधर श्रीकृष्ण अपने सखाओं के साथ कुंज वाटिका, ग्राम सूर्यकुण्ड में विभिन्न लीला-कुंजलीला, वंशीचोरी लीला, डोला लीला, पासा खेला लीला आदि लीलाओं में मग्न थे। सूर्य नारायण मन्दिर में ही खेल चल रहा था, खेलते-खेलते सूक्ष्मधी नाम की सारिका वहां आ गई। इस सारिका को वृन्दा देवी ने जटिला का समाचार लाने को भेजा। वह सहसा आकर कहने लगी-गोष्ठ से जटिला आ रही है। यह सुनते ही श्रीराधा-कृष्ण भयभीत होकर अपने परिकरों के साथ वहाँ से निकलकर शीघ्र ही कुंजेनर नामक कुंज में चले गये।

सूर्यकुण्ड में सूर्यपूजादि

उस कुंजेनर नामक कुंज में कुंदलता श्रीकृष्ण को बैठाकर श्रीराधा के साथ सूर्य मन्दिर को चली गई, इतने में वहां (सूर्य मन्दिर में) जटिला आ पहुँची और कुंदलता से पूछने लगी-कुंदलते ! इतनी देर क्यों? कुंदलता ने उत्तर दिया, एक भी ब्राह्मण बालक यहाँ मिल नहीं रहा है। गांव की युवतियां सब ब्राह्मण बालकों को एक दिन पहले से ही न्यौता दे गयीं हैं। किन्तु एक जन गर्गाचार्य का शिष्य मथुरावासी ब्राह्मण बालक यहां आया हुआ है। वह सूर्यपूजन कार्य में अत्यंत दक्ष है। श्रीकृष्ण काम्यवन में गौऐं चरा रहे हैं। उनके कहने से मधुमंगल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्यामकुंड में स्नान करने आया हुआ है। वह मथुरावासी ब्राह्मणकुमार हमारी प्रार्थना पर यहाँ आ रहा था, परन्तु उस दुष्ट मधुमंगल ने जो तुम्हारे कटुवचनों से रुष्ट है उसने तुम्हारे दोषों को सुनाकर मार्ग में आते-आते उसको रोक दिया है।

यह सुनकर जटिला ने पूछा कि वह ब्राह्मण कुमार कहाँ है ? तो कुंदलता बोली कि वह यहीं पर है, वन की शोभा देख रहा है। जटिला बोली कि उसे तुरंत ले आओ। कुंदलता ने उत्तर दिया कि तुम्हारे गुणों के कारण वह आना नहीं चाहता है। तब जटिला ने कहा-कुंदलते ! तुम धनिष्ठा को लेकर जाओ, वह ब्राह्मण कुमार यदि अकेला न आना चाहे तो दोनों को "तुम्हें अच्छे-अच्छे मिष्ठान्न भोजन और मोटी दक्षिणा देंगी" यह कहकर मना लाओ। वृद्धा जटिला के दो तीन बार इस प्रकार कहने पर कुंदलता व धनिष्ठा वहाँ गयीं जहाँ मधुमंगल के साथ श्रीकृष्ण बैठे हुए थे। जाकर देखा कि श्रीकृष्ण ब्राह्मण वेश बनाकर साक्षात वेदमूर्ति बने बैठे हैं। उन दोनों को लेकर वह तुरन्त ही लौट आयी। जटिला ने श्रीकृष्णरूपी ब्राह्मण का बड़ा आदर सम्मान किया। श्रीकृष्ण भी "तुम्हारे पुत्र के गोधन की वृद्धि होवे और तुम्हारी पुत्रवधू सर्वमंगलवती होवे"। यह कहकर उसे आशीर्वाद देने लगे। पूजा आरम्भ होने पर श्रीकृष्ण ने वृद्धा जटिला से पूछा- "तुम्हारी पुत्रवधू का नाम क्या है?" वृद्धा ने कहा 'राधा'। यह सुनते ही श्रीकृष्ण चौंककर वृद्धा से कहने लगे "वह गुणवती यही है क्या? जिसका सतीत्व ब्रज में प्रसिद्ध है। धन्य हो तुम जो तुमको यह पुत्रवधू मिली है, फिर श्रीराधा से बोले, बिना वरण किये पुरोहित कभी कर्म न करे"- ऐसी वेद की आज्ञा है। अतः इस सूर्यपूजारूप महायज्ञ में मुझे वरण करो। परन्तु मैं स्त्री का स्पर्श नहीं करता हूँ, सो तुम कुश से मुझे स्पर्श कर मन्त्र पढ़ो। (गूढ़ार्थ-'मास्वत् अर्थात् प्रकाशमान 'अतनुक्रतु' अर्थात् काम यज्ञ में 'वृत' अर्थात् वस्त्र से आवृत होकर कर्म न करावे। अतएव वस्त्र त्यागकर समस्त स्त्रियों के स्वामी मुझे कामातुरा हो अंकुश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सदृश तीक्ष्ण नखों द्वारा स्पर्श करती हुई क्रिया करो) वरण का मंत्र-वरण के समय प्रथम पुरोहित के गोत्र, प्रवर एवं नाम का उच्चारण करना पड़ता है, अत: श्रीकृष्ण वही उच्चारण करवाते हैं। यथा-जगन्मंगलकारी भगवान ही जिनका गोत्र है, विशुद्ध ज्ञान जिनका प्रवर है, उसी शुद्ध चित्त वाले विश्व शर्मा नामक आपको मैं पुरोहित के पद पर वरण करती हूँ। (गूढ़ार्थ-जिनका गोत्र जगत् का मंगलकारी है जो शुचिवित् अर्थात् शृंगाररस के वेत्ताओं में प्रवर अर्थात् श्रेष्ठ हैं, उन्हीं विश्वशर्मा अर्थात् विश्व के सुखकारी पुरोहित अर्थात् अग्रे हितकारी को मैं वरण करती हूँ) पूजा का मन्त्र-जो अतनु अर्थात् अधिक अन्धकार का विनाशकारी है, जो सायंकाल व प्रभात में अति अनुरक्त अर्थात् अरुणवर्ण वाला है, सम्मुख स्थित है एवं पद्मिनी-बन्धु है उस मित्र नामक भास्वान् अर्थात् प्रकाशमान सूर्य को नमस्कार करती हूँ। (गूढ़ार्थ: जो श्रीभगवान् अर्थात् वक्ष:स्थल पर स्वर्ण-रेखा की कान्ति से युक्त हैं, अतनु अर्थात् तनुहीन कन्दर्प के तम: अर्थात् दु:ख के विनाशकारी हैं, अतिशय अनुरागवती पद्मिनी नायिका के बन्धु हैं, उन्हीं सम्मुख स्थित मित्र (श्रीकृष्ण) को मैं नमस्कार करती हूँ।) तब पुरोहित रूपी श्रीकृष्ण बोले, "राधे! तुम इस मन्त्र द्वारा मित्र अर्थात् सूर्य को पाद्य अर्घ्यादि एवं आत्मा (मन) समर्पण करो तथा गौरकिरण वाले सूर्यदेव भी तुम्हारा काम अर्थात् अभीष्ट प्रदान करें। (गूढ़ार्थ मित्र अर्थात् प्रिय, गौरांशुक: अर्थात् पीताम्बरधारी मुझको अपनी आत्मा अर्थात् शरीर समर्पण करो, मैं तुम्हें कन्दर्पविलास समर्पण करूंगा।) तब मधुमंगल "स्वस्ति न इन्द्र:"-इत्यादि वेदमन्त्रों का निरन्तर पाठ करने लगा। पूजन समाप्त होने पर वह श्रीराधा को उपदेश करता हुआ बोला- 'हे राधे ! गोपति सूर्य-पूजा की पूर्ति और गोसमूह की समृद्धि के निमित्त तुम अपने गोसमूह को इस पुरोहित को दक्षिणा में दो (गूढ़ार्थ: जो गौओं के पति व पुरोहित अर्थात् आगे हित करने वाले हैं, उनकी पूजा की पूर्ति के निमित्त तुम श्रीकृष्णको अपने इन्द्रियों की दक्षिणा दो।) वृद्धा जटिला ने नैवेद्य व दक्षिणा स्वरूप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुवर्ण की दो अंगूठियां पुरोहित रूपी श्रीकृष्ण के आगे अर्पण कीं तो श्रीकृष्ण हँसते हुए जटिला से कहने लगे-हम लोग अनन्य वैष्णव हैं। अतएव अन्य देवता का प्रसाद ग्रहण नहीं करते हैं और मैं तो शुद्ध वृत्ति वाला ब्रह्मचारी हूँ। सो अन्य जाति का अन्न व धान भी ग्रहण नहीं करता हूँ। मैं गर्गाचार्य का शिष्य हूँ, ज्योतिष व सामुद्रिकादि शास्त्रों का पण्डित हूँ। अतएव सर्वज्ञ हूँ। मेरे प्रति तुम ब्रजवासियों की सहज प्रीति ही मेरी बड़ी दक्षिणा है।

तब वृद्धा जटिला ने कुन्दलता के कान में कुछ कहा तो कुन्दलता श्रीकृष्ण से बोली, " हे ब्रह्मचारी महाराज ! वृद्धा जटिला आपसे यह निवेदन करती है कि आप वधू श्रीराधा का हाथ देखकर फलाफल बतायें। श्रीकृष्ण कुन्दलता से बोले, "स्त्री का अंग-दर्शन करना मेरा कर्त्तव्य नहीं है, तथापि तुम लोगों की प्रीति के वशीभूत होकर मैं दूर से हाथ देख लेता हूँ और तुम इस पतिव्रता का हाथ मेरे आगे बढ़वाओ। कुन्दलता ने श्रीराधा का हाथ पकड़कर आगे बढ़वाया तो उसके दर्शन से श्रीकृष्ण को कम्प, अश्रु एवं रोमांच होने लगा। श्रीकृष्ण अपने इन आनन्दजन्य विकारों को विस्मय रस द्वारा आच्छादन करके बोले, 'ओहो ! यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। इस वधू के हाथ में जो शुभ चिन्ह देख रहा हूँ, उनसे तो यही निश्चय होता है कि यह तो साक्षात् लक्ष्मी ही है। इसकी यदि कृपा-दृष्टि हो जाय तो हम सर्वसम्पत्ति से परिपूर्ण हो जावें और जिस स्थान में इसका निवास होता है वहाँ सम्पत्ति सहित सर्वमंगल विद्यमान रहते हैं।

जब जटिला से बोले, "अपने पुत्र का नाम तो बताओ"। उसके नाम बताने पर श्रीकृष्ण उस नाम की गणना करके अत्यन्त विस्मित हो जटिला से बोले-वृद्धे ! तुम्हारे पुत्र की परमायु में बहुत से विघ्न हैं, परन्तु इस पतिव्रता वधू के प्रभाव से वे सब विघ्न कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। यह सुनकर वृद्धा ने आनन्दित होकर श्रीराधा की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रत्नजटित अमूल्य दो रत्नमुद्रिकायें श्रीकृष्ण के आगे पारितोषिक के रूप में रखीं। इतने ही में सुबल ने आकर कहा, " हे विश्वशर्मा ! पयःफेन अर्थात् 'घैयां' व फलादि भोजन के लिए श्रीकृष्ण तुम्हारी व मधुमंगल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सुनकर विश्वशर्मा रूपी श्रीकृष्ण बोले, "मैं ब्राह्मण अन्य जाति का अन्नादिक भोजन नहीं करता हूँ। गार्गी (गर्गकन्या) ने मुझे निमन्त्रण दे रखा है। मैं अब शीघ्र वहाँ जाता हूँ। मधुमंगल ! तुम ही नैवेद्य ग्रहण करो।

तब मधुमंगल बोला, "वृद्धे ! तुम मुझे स्वस्ति वाचन के लिए दक्षिणा दो"। जटिला ने अपनी अंगुली से स्वर्ण की अंगूठी निकालकर मधुमंगल को पकड़ा दी। मधुमंगल अंगूठी पाकर आनन्द से बारम्बार बगल बजाता हुआ वस्त्रांचल (पल्ला) में नैवेद्य बांधने लगा और वधू व वृद्धा की प्रशंसा करता हुआ नाचने लगा। दक्षिणा को ग्रहण करने के लिए वृद्धा की प्रार्थना पर मधुमंगल श्रीकृष्ण से बोला कि तुम यदि दक्षिणा का धन न लोगे तो व्रत पूर्ण नहीं होगा। अतएव कृपा करके यह दक्षिणा ग्रहण करो। तुम्हारा यदि धन से कोई प्रयोजन न हो तो किसी ब्राह्मण को दे देना। इससे व्रतकारिणी वधू का भी मंगल होगा। श्रीकृष्ण ने बारम्बार निषेध किया परन्तु मधुमंगल ने यह कहते हुए कि मेरे द्वारा दक्षिणा स्वीकार करने पर तुम्हें कोई दोष नहीं लगेगा, उन दो अंगूठियों को हँसते-हँसते अपने अंचल में ही बाँध लिया।

जब जटिला श्रीकृष्ण से बोली-"ब्रह्मचारी महाराज ! मेरे सौभाग्य से जब कभी आप हमारे यहाँ ब्रज में आगमन करें, तब ही मैं इस वधू द्वारा सूर्यपूजा के लिए आपको ही वरण करूँगी और खूब दक्षिणा दूंगी"। इतना कहकर जटिला ने बड़े प्रसन्न मन से सूर्यदेव को तथा दोनों ब्रह्मचारियों (विश्वशर्मा और मधुमंगल) को प्रणाम किया और अपने को कृतार्थ मानती हुई श्री राधादि को साथ लेकर अपने घर के लिए चली गई। श्रीराधा घर को जाते हुए पीछे आ रही ललिता के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ वार्तालाप करने के छल से बार-बार गर्दन मोड़कर श्रीकृष्ण के मुखकमल मधु का अपने नेत्र-कोण की कटाक्ष-लहरियों द्वारा पान करने लगीं, परन्तु तृप्ति लाभ न करने के कारण दीन-दुःखी हो गई। सुन्दर भ्रूवाली श्रीराधा के जिस देहरूप क्षुद्र स्वर्णघट ने श्रीकृष्ण के लीलामृत रूप स्निग्ध दुग्ध द्वारा परिपूर्ण होकर सखियों के नेत्रों को आनन्द प्रदान किया था, वही देहघट अब विरस व विरहविष से विवर्ण (फीका) होकर सखियों के नेत्रों को सन्ताप देने लगा। उधर नीलकमल की सी कान्ति वाले श्रीकृष्ण भी जो पहले कान्ता-संगरूप चन्द्रोदय से प्रफुल्लित हुए थे अब विरहरूप सूर्योदय से म्लान (मलिन) होकर क्षणभर में कुछ दूसरे से हो गये।

सुबल और मधुमंगल के साथ श्रीकृष्ण उदास मन से अपने सखाओं के समीप आये, और वे सखावृन्द भी 'यह मेरा सखा आ रहा है मैं जाकर इसे पहले स्पर्श करूँगा' कहते हुए बड़े प्रसन्न मन से श्रीकृष्ण को आलिंगन करते हुए कहने लगे-"भाई कृष्ण ! हम तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकते। जब तुम हमें छोड़कर चले गये तो हमने स्पष्ट रूप से यही समझ लिया था कि तुम बड़े कठोर हृदय वाले हो। इससे हम व्याकुल और दीन दुःखी चित्त से तुम्हें ढूंढ़ने के लिए तुम्हारे समीप चलने की इच्छा कर ही रहे थे कि तुम आधे क्षण में आ पहुँचे। इससे हे प्रिय सखे ! हम समझ गये कि तुम कितने कोमल हृदय वाले हो।

श्रीराधा के साथ श्रीकृष्ण का यह मध्याह्न लीला रूप अमृत सागर विशेष शोभा को प्राप्त हो रहा है। यह अपार, असीम है, दुर्विगाह है अर्थात् अन्य कोई भी स्वतन्त्र रूप से इस लीला सागर में प्रवेश नहीं कर सकता है। किन्तु उस मध्याह्न लीलामृतसागर में विलास करने वाले वृन्दावन के ये श्रीरूप, सनातन, भट्टरघुनाथ, जीवगोस्वामी, रघुनाथदास, गोपालभट्ट गोस्वामी और श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी आदि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीराधाकृष्ण के परम कृपापात्र गुरु वैष्णवजन इस लीलासागर में आस्वादन करने के योग्य पात्र हैं।

इस मध्याह्न लीला स्थान श्रीकुंज वाटिका महातीर्थ सूर्यकुण्ड में श्रीराधाकृष्ण तथा श्रीसूर्यनारायण की महिमा का जो श्रवण करता है अथवा उनका कीर्तन, स्मरण और भजन करता है अन्याभिलाषी न होकर वह भगवान के नित्यधाम गोलोक वृन्दावन में भगवान का नित्य सहचर होगा, पुनर्जन्म न विद्यते और मनोवाञ्छा की पूर्ति होगी। श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी द्वारा रचित गोविन्दलीलामृत ग्रन्थ से श्रीराधाकृष्ण की मध्याह्न लीलास्थली श्रीसूर्यनारायण के सूर्यकुण्ड माहात्म्य का प्रकाश हुआ है।

विशेष बात

साधुसन्त और बड़े-बूढ़े ब्रजवासियों के मुखारविन्द से जो सुना है वह इस प्रकार है- कलियुग के प्रारम्भ में असुरों का अत्याचार बढ़ने से असुरों और अभक्तों की संख्या बढ़ गई। असुरों द्वारा मन्दिरों पर आक्रमण आरम्भ हो गये थे, भक्तलोग मन्दिर की सेवा छोड़कर चले गये। श्रीसूर्यनारायण की विग्रह अपने आप श्रीसूर्यकुण्ड में समा गई। हजारों वर्ष व्यतीत होने पर आज से दो सौ पचास वर्ष पूर्व श्रीसूर्यनारायण ने अपने एक परम शुद्धभक्त बरसाना के रूपराम कटेरा ब्राह्मण को दर्शन देकर स्वप्न में आदेश दिया-हे ब्राह्मणदेव ! राधाजी मेरी सेवा करने के लिए मध्याह्न काल में आया करती थीं। कालक्रम से मैं कुण्ड के अन्दर हूँ, मुझे बाहर निकालकर मन्दिर में प्रतिष्ठा करके सेवा करो, तो तुम्हारे मन की इच्छा पूरी होगी तथा यश, प्रतिष्ठा और लाभ होगा। अकाल कभी नहीं आयेगा। मैं सबकी रक्षा करूँगा। श्रीसूर्यनारायण ने स्वप्न में यह वचन दिया।

ब्राह्मण स्वप्न को साकार करने के लिए प्रातःकाल अपने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्यपूजादिकर्म से निवृत्त होकर दस-बीस ब्राह्मणों को साथ लेकर श्रीसूर्यकुण्ड में उपस्थित हुआ और कुण्ड के मध्य भाग को खोदकर श्रीसूर्यनारायण की सुन्दर विग्रह बाहर निकाली और मन्दिर का निर्माण करके श्री सूर्यनारायण की विग्रह प्रतिष्ठा की गई। तब से श्रीसूर्यनारायण की सेवापूजा चली आ रही है। इस ग्राम का नाम था कुंज वाटिका सूर्यकुण्ड। बाद में मुसलमानों के शासनकाल में बादशाह ने प्रत्येक गांव और शहर का नाम बदल दिया। इस गांव का नाम भरनाखुर्द रखा गया जो इसी नाम से प्रसिद्ध है। आज इस गांव को छोटा भरना भी कहते हैं। श्रीसूर्यनारायण की इस गांव पर ऐसी कृपा है कि इस गांव के धनाढ्य इहवासी नाम से प्रसिद्ध हैं।

एक अन्य प्रमाण

रघुनाथदास गोस्वामी ने ब्रजविलास स्तव में इसका वर्णन किया है। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने भी कृष्णभावनामृत ग्रन्थ में एवं अन्य-अन्य गोस्वामियों के ग्रन्थों में भी इसके सुन्दर प्रमाण मिलते हैं। कंस, देवकी की आठवीं संतान शिशु को पकड़कर मार रहा था, तब राजा बृषभानु ने कंस के भय से अपनी कन्या श्रीराधा को एकान्त स्थान कुंजवाटिका सूर्यकुण्ड में छिपा दिया था। वहां पर श्रीराधाजी घनप्रकाश स्वरूप को धारण कर श्रीकृष्ण को प्राप्त करने की इच्छा से उनका ध्यान कर बड़ी सावधानीपूर्वक उन श्रीकृष्णरूपी सूर्यनारायण की पूजा करने लगीं।

जय श्रीराधे !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीअद्वैतदास मौनी बाबा

(सूर्यकुण्ड)

श्रीअद्वैतदास मौनी बाबा का जन्म मुखर्जी ब्राह्मण परिवार में मैदिनीपुर जिले के अन्तर्गत पश्चिम बंगाल में हुआ था। 16 साल की आयु में बाबा गृहत्याग कर कलकत्ता आ गये। वहाँ आपने मैडिकल साइंस का अध्ययन करके प्रैक्टिस आरम्भ की। 20 साल की आयु में बाबा अध्ययन छोड़कर वृन्दावन आ गये और संसार से विरक्त होकर वहाँ रहने लगे। ये बड़े विद्वान, तेजस्वी और सुशील स्वभाव के थे। बाबा 20 साल की आयु में नागबलभद्र अखाड़े की गद्दी के महंत पद पर आसीन हुए और कुछ वर्ष व्यतीत होने पर यह गद्दी भी त्याग कर गोवर्धन में एक बाबाजी महाराज से बाबाजी वेश ग्रहण किया। बाबा का आदेश प्राप्तकर श्रीसूर्यकुण्ड में सिद्ध बाबा की सेवा में 20 वर्ष तक महन्त पद पर रहे। 2 वर्ष तक मौन व्रत भी किया, उनकी तपस्या के बल से श्रीसूर्यनारायण की सेवा प्राप्त की। उस समय सूर्यकुण्ड के ब्रजवासियों में शिक्षा का बहुत अभाव था, वहाँ डॉक्टर और दवाइयों का भी बड़ा अभाव था। बाबा ग्रामवासियों को रामायण, महाभारत व नाटकों के माध्यम से विद्याध्यन कराते थे। गांववालों को दवाइयां भी उपलब्ध कराते थे। वे ग्रामवासियों की निःशुल्क चिकित्सा करने आदि प्रत्येक कार्य में निपुण थे। 35 वर्ष तक श्रीसूर्यनारायण की सेवा में व्यस्त रहकर गांववासियों को सुनाया करते थे कि मैं संवत 1999 को श्रीसूर्यनारायण के दर्शन के लिए यहाँ आया था। विशेष रूप से मुझे फाल्गुनी सखा महाराज ने प्रेरणा दी कि सिद्धपीठ की सिद्धविग्रह सेवा बड़े सौभाग्य से मिलती है। आप इस सेवा को अवश्य संभालें। वह मधुसूदन दास सिद्ध बाबा के जन्मोत्सव का दिन था। मैं श्रीसूर्यनारायण के दर्शन कर बाहर निकल रहा था तब मौनी बाबा ने पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो? मैंने उत्तर दिया-शेरगढ़ के पास श्रीबलराम की रासस्थली रामघाट से आ रहा हूँ। बाबा ने पुनः पूछा क्या तुम गौड़ीय सम्प्रदाय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के हो? मैंने कहा- हाँ। बाबा ने कहा मुझे गौड़ीय मठ के भक्त बहुत पसन्द हैं। मैं इस सम्प्रदाय के अनेक संन्यासियों से परिचित हूँ जैसे-पूज्यपाद बन महाराज, पूज्यपाद भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज पूज्यपाद भक्तिसारंग गोस्वामी महाराज आदि यहाँ दर्शन करने आते थे। मेरा इन सबसे घनिष्ठ परिचय था। मेरी इच्छा थी कि गौड़ीय मठ के लोग ही इस सेवा को सम्हालें। तुम आये हो अब तुम सूर्यनारायण की सेवा सम्हालो। दो दिन पूर्व ही मैंने एक स्वप्न देखा था कि एक श्याम वर्ण का साधु आकर मुझसे कहने लगा कि अब तुम चिन्ता मत करो, जल्दी ही एक सेवक आ रहा है। यह कहकर वह अन्तर्ध्यान हो गये, तुम्हें देखकर मेरी श्रद्धा उत्पन्न हो गई, इसलिए ठाकुरजी की सेवा तुमको दे रहा हूँ। यह कहकर श्री सूर्यनारायण के गले की पुष्पमाला लेकर मुझे पहना दी। मैंने अत्यंत भयभीत होकर बाबा से कहा-बाबा मैं अकेला सेवा नहीं कर पाऊँगा। यह सेवा और किसी को दे दो। बाबा ने कहा- सूर्यनारायण तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं, वह तुमसे सेवा लेना चाहते हैं। इन्होंने पूछा कि बाबा आप कहाँ जाओगे? तब बाबा कहने लगे कि वृन्दावन में मेरी एक कुटिया है वहीं जाऊँगा। मैंने उनसे निवेदन किया कि आप यहाँ रहेंगे तो मैं सेवा करूँगा। बाबा चार माह तक तो यहाँ रहे। बाद में वे वृन्दावन चले गये।

बाबा इस जगत में करीब 100 वर्ष तक रहे। सन् 2000 में श्रावणमास की सोमवती अमावस्या के दिन सन्ध्या के करीब 4 बजे बाबा इस लोक को त्यागकर श्रीगोलोंक वृन्दावन को चले गये। भाद्रमास में अनन्त चतुर्दशी के दिन से बाबा के निमित्त भागवत सप्ताह यज्ञ सम्पन्न हुआ।

सूर्य नारायण की अलौकिक लीला का सम्बन्ध बाबा से रहा है। सन् 1983 में ज्येष्ठ मास में दोपहर करीब ढाई बजे दो बदमाश मंदिर में घुस आये। बाबा उस समय सब्जी काट रहे थे। श्रीसूर्यनारायण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की ठोड़ी में नकली कांच का हीरा लगा हुआ था, तीन बदमाश बाबा के चरण धोने के छल से उस कांच के हीरे को लेने के लिए आये थे। बदमाशों ने बाबा का गला पकड़कर नीचे दबा दिया। सूर्यनरायाण की शक्ति के प्रभाव से बाबा बदमाशों के फंदे से छूटकर बाहर आकर चिल्लाने लगे। इनकी आवाज सुनकर सभी गांव वालों ने तीनों बदमाशों को गोली से मार गिराया। यह बाबा के लिए एक आश्चर्य की बात थी कि बदमाशों के फंदे से बच गये और गांव वालों ने चोरों को यमलोक पहुँचा दिया। यह है सूर्यनारायण की चमत्कारिक अलौकिक लीला। भगवान का भक्त के साथ नित्य सम्बन्ध है।

जय श्रीराधे !

श्री मधुसूदनदास सिद्ध बाबाजी

(सूर्यकुण्ड)

श्री मधुसूदनदास बाबा का जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था, ऐसा साधु-वैष्णवों के मुख से सुना जाता है लेकिन कहाँ और किस परिवार में हुआ, यह विदित नहीं है। भक्तमाल में यह सब नहीं बताया गया है। मधुसूदनदास सिद्ध बाबा बाल्यावस्था से ही संसार से विरक्त होकर भगवान की भक्ति भाव में लग गये थे। वे भजनशील थे। भगवान की कथा श्रवण और कीर्तन में उनकी रुचि थी । बाल्यावस्था में बाबा ने एक श्यामवर्ण, वंशी और मोरमुकुटधारी बालक के विषय में सुन रखा था। वह रूपवान, शक्तिवान, गुणवान, दयावान और सुहृद स्नेही भी है। उनका जो भजन करता है-उसके सारे अभाव दूर हो जाते हैं। वह भक्तों की सभी प्रकार के कष्टों से रक्षा करता है, वह लीला विनोदी है। तब से ही बाबा का उसके प्रति अनुराग हो गया। वह सब समय उसके बारे में सोचते रहते थे । किसी संसारी कार्य में उनका ध्यान नहीं था। उनकी इस प्रकार की विरक्ति को देखकर माता-पिता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिन्तित हो गये । संसार में बाँध रखने के लिए उनकी इच्छा के विरुद्ध माता पिता ने उनका विवाह कर दिया। विवाह की प्रथम रात्रि में ही नववधू से प्रथम मिलन की बेला में वह घर से भागकर वृन्दावन चले गये। वृन्दावन से दूर वन में रहकर वंशीवाले की याद में अपना समय व्यतीत करने लगे। कभी गांव से मधुकरी करके ले आते और कभी यमुना का जल पीकर रह जाते। उन्होंने सुन रखा था कि बिना गुरु दीक्षा के भगवत् प्राप्ति सम्भव नहीं है। एक दिन वह केशी घाट के तटपर यमुना के किनारे एक वृक्ष के नीचे सद्गुरु प्राप्ति की चिन्ता में बैठ गये। उसी समय एक महात्मा ने उनको देखकर कहा-बेटा यमुना में स्नान करके आ जाओ। मैं तुम्हें दीक्षा मन्त्र दूँगा। चिन्तामणि स्वरूप वृन्दावन में महात्माजी ने उनको दशाक्षर मन्त्र की दीक्षा दे दी। मन्त्र दीक्षा मिलने के बाद वे आविष्ट होकर भूमि पर गिर पड़े। थोड़ी देर बाद चेतनावस्था में उठकर देखा तो महात्माजी अन्तर्ध्यान हो गये हैं। उनका नाम पता भी नहीं जान सका। वृन्दावन से गोवर्धन आकर मानसी गंगा के निकट सिद्ध कृष्णदास बाबा से कहने लगे ! बाबा मैं महामूर्ख हूँ, भजन के विषय में कुछ भी नहीं जानता हूँ। मुझे आप भजन का उपदेश प्रदान करने की कृपा करें। सिद्ध बाबा ने उनके भक्तिभाव से प्रभावित होकर उनका परिचय पूछा। उन्होंने भी गृहत्याग से लेकर दीक्षाकाल तक की सभी घटनायें बतला दीं। तब सिद्ध बाबा ने कहा हमारे रागमार्ग के अनुयायी रागानुग हैं। रागमार्ग का भजन सम्बन्धानुग है।

सम्बन्धानुग गुरु परिवार से ही होता है। पर तुम्हें अपने गुरु परिवार का ही पता नहीं है। इसलिए रागानुग भजन में तुम्हारा अधिकार नहीं है, क्योंकि तुमने इस परिवार से मन्त्रदीक्षा ली है। सिद्ध बाबा की बात सुनकर वे बज्रहत की भांति रोदन करने लगे । तब बाबा ने कहा- तुम काम्यवन में जय कृष्णदास बड़े सिद्ध बाबा के पास जाओ, वह सर्ववेत्ता हैं, वह तुम्हें गुरु सम्बन्ध का परिचय बतला देंगे। वह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काम्यवन जाकर बड़े सिद्ध बाबा से मिले। सर्वज्ञ होते हुए भी सिद्ध बाबा ने उपधर्म की सृष्टि होने के भय से कहा-ऐसी स्थिति में तुम्हें एकान्त में बैठकर हरिनाम करना चाहिए, राधारानी जो करेंगी वही होगा। चिन्तामणि श्री गुरुदेव ने जिस प्रकार तुम्हारी दीक्षा की इच्छा पूर्ण की है वैसे ही रागानुग भजन की इच्छा भी पूर्ण करेंगे।

गंगा निकलती है गिरिगुहा से समुद्र से मिलने की आकांक्षा लेकर और तबतक निरंतर बहती रहती है जब तक समुद्र में समा नहीं जाती। यदि मार्ग में कोई बाधा आती है तो और भी अधिक वेगवती हो जाती है। कृष्णानुराग की भी ऐसी गति है। रागानुगी साधक के लिए इससे बड़ी बाधा क्या हो सकती है कि जिसके लिए वह सबकुछ त्यागकर दर-दर का भिखारी बन जाये, और उसे भजन के लिए अधिकारी ही न समझा जाये। सिद्ध जयकृष्णदास बाबा का उपदेश उनके नवअनुराग के लिए विस्फोटक सिद्ध हुआ। उसके अनुराग की अग्नि धूं-धूंकर जलने लगी। जीवन निराशामय निरुद्देश्य और निरर्थक प्रतीत होने लगा। ऐसे जीवन को लेकर वह क्या करता? गिर्राज शिलारूपी गिरिधारी को गले से बाँधकर राधाकुण्ड में कूद पड़ा। राधाकुण्ड के अतल तल में संज्ञाहीन अवस्था में जाने कब तक पड़ा रहा, संज्ञा आने पर उसने देखा कि किसी ने उसके गले की रस्सी खोल दी है और हाथ में एक तालपत्र देकर उसे कुण्ड के तट पर लिटा दिया है। तालपत्र में कुछ लिखा है। चेतना आते ही देखा कि यह राधारानी की कृपा है। दिन निकलते ही वह काम्यवन वाले बड़े सिद्ध बाबा के पास चले गये और उनको सारा वृत्तान्त कह सुनाया। सिद्ध बाबा ने कहा-तुम्हारे ऊपर राधारानी की यथेष्ट कृपा है, पर तुम्हें जो मिला है वह भी अव्यक्त है। रागानुगा सेवा के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता है। तुम पुनः राधाकुण्ड जाकर प्रियाजी को पुकारो, वह तुम पर अवश्य कृपा करेंगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह राधाकुण्ड जाकर आर्तभाव से राधारानी को पुकारने लगे। भक्त की आर्तनाद सुनते ही राधारानी ने प्रकट होकर उपदेश दिया "सूर्यकुण्ड में जाकर भजन करो; वहीं तुमको अभीष्ट रागानुग सेवा की प्राप्ति होगी। जो मन्त्र तुम्हें मिला है, उसे गोपनीय रखना।

तब से वह सूर्यकुण्ड में रहकर भजन करने लगे। लोग उनको मधुसूदनदास बाबा कहकर पुकारने लगे। मधुसूदनदास नाम उनके गुरु ने ही उनको दिया होगा। एक दिन प्रियाजीने मधुसूदनदास जी को स्वप्नादेश दिया-तुम जिस घाट पर स्नान करते हो उसके निकट कंठ तक जल में एक शिला है, उस पर मैंने और मेरी दो सखियों ने स्नान करते समय अपने केयूर और अंगरागादि रख दिये थे। उनके स्पर्श से ही शिला गल गई और उन पर आभूषणों के चिन्ह बन गये हैं। तुम उन शिलाओं को निकालकर उनका पूजन किया करो।

मधुसूदनदास बाबा कुण्ड के जल में प्रवेशकर उस शिला को निकालने लगे तो वह दो ढाई मन की शिला फूल के समान प्रतीत हुई। उन्होंने उसे उठाकर कुण्ड के तटपर रख दिया। आज भी लोग वहाँ उसके दर्शन करते हैं। कहते हैं तभी से मधुसूदन दास बाबा सिद्ध मधुसूदन दास बाबा कहलाने लगे।

मधूसूदन दास बाबा शेष रात्रि में कुण्ड के तट पर बैठकर उच्च स्वर से-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

इस महामन्त्र का कीर्तन किया करते थे। प्रातःकाल जब लोगों का बाहर चलना फिरना आरम्भ हो जाता तब कुटी के भीतर शान्त भाव से बैठकर भजन करते। उनकी सिद्धावस्था की बहुत सी अलौकिक लीलायें हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक बार कार्तिक मास में बाबा मधुसूदन दास ने श्रीमद्भागवत करने की इच्छा प्रकट की। ब्रजवासियों ने पूर्ण रूप से इसकी व्यवस्था कर दी। रासपञ्चाध्यायी का पाठ होने लगा। सूर्यकुण्ड निवासी एक डोमा का बच्चा नित्य पाठ सुनने आया करता था। पाठ के अन्तिम दिन वह बालक बाबा की गोद में बैठकर पाठ सुनने लगा। पाठ के बीच में ही उसने पूछा-बाबा ! श्रीकृष्ण ने रासलीला के पश्चात कहाँ विश्राम किया, सेवा कुंज में या संकेत वन में? बाबा मेरे प्रश्न का उत्तर देते उसके पूर्व ही बम फटने जैसा शब्द हुआ और उनके प्राण ब्रह्मरन्ध्र भेदकर निकल गये। उस स्थान पर उनकी समाधि आज भी विद्यमान है। आज समस्त विश्व भर के लाखों तीर्थयात्री और दर्शनार्थी महातीर्थ सूर्यकुण्ड में श्रीसूर्यनारायण के दर्शन करने के लिए आते हैं। श्रीसूर्यनारायण स्वयं राधारानी द्वारा प्रतिष्ठित एवं सेवित विग्रह के दर्शनकर भक्तगण लाभ उठाते हैं। सिद्ध बाबा की दिव्य भजनस्थली श्री राधाजी के केयूर मुकुट चिन्ह के दर्शन करके अपना जीवन धन्यातिधन्य करते हैं। इस प्रकार वे इस अलौकिक लीला का दर्शन कर अपनी मनोवांछा पूर्ण करते हैं।

जय श्रीराधे !

श्री गोपालदास बाबाजी

(सूर्यकुण्ड)

श्री गोपालदास बाबा का जन्म मणिपुर के इम्फाल नगर में सन् 1851 के लगभग हुआ। उनके पिता श्रीमेघवर्ण शर्मा बड़े ही भगवद् भक्त थे। गोपालदासजी पर पिता की पूरी छाप थी। अल्पावस्था में ही उनमें एक महान भगवद्भक्त के लक्षण दिखाई देने लगे। वे बड़े वैराग्य से रहते और अपना अधिकांश समय भगवद् भजन में व्यतीत करते थे। उनका तीव्र वैराग्य देखकर पिताजी ने उन्हें दीक्षा दी और व्रज में जाकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भजन करने का उपदेश दिया। वे पैदल यात्रा करते हुए ब्रज पहुँच गये। ब्रज में पहुँचने के बाद बाबा वृन्दावन के सुन्दर मयूरों की आवाज सुनकर आनन्द में डूब गये। कुछ दिनों के बाद नरोत्तम दास ठाकुर परिवार की परम्परा में विनोद दास बाबाजी से वेश लिया। विनोददास बाबा गोवर्धन में चकलेश्वर महादेव के पास रहते थे, वेश लेने के बाद विनोद दास बाबा ने गोपालदास बाबा को श्रीसूर्यकुण्ड में भजन करने का आदेश दिया था। विनोददास बाबा ने उनको कुछ उपदेश भी दिये, जैसे-तुम ब्रजभाषा मत सीखना, क्योंकि यह हरिभजन में अनुकूल नहीं होगी। ब्रजवासियों से घनिष्ठ सम्बन्ध और प्रेम होने पर भजन में बाधा उपस्थित होगी। बाबा मधुसूदनदास सिद्ध बाबा के शिष्य हरिगोपाल दास बाबा के साथ शिक्षा ग्रहण करने लगे। उस समय वह सूर्यकुण्ड में ही भजन करते थे।

बाबा नित्यप्रति भागवत के एक अध्याय का पाठ किया करते थे। उस समय उनकी आयु 90 वर्ष की थी। दृष्टि कमजोर होने पर उनका भागवत पाठ बन्द हो गया। दुःखी होकर चिन्ता करते-करते बाबा को तन्द्रा आ गई तब सपने में एक सुन्दर ब्रज कन्या ने आकर कहा-बाबा तुम चिन्ता क्यों कर रहे हो? बाबा ने कहा-लाली मेरी दृष्टि बिल्कुल बंद हो गई है। इस कारण मैं भागवत पाठ, साधु सन्तों की सेवा, और ठाकुर के दर्शनों से भी वंचित हो गया हूँ। अब मैं इस शरीर को त्यागना चाहता हूँ। बालिका ने बाबा को सांत्वना देते हुए कहा-चिन्ता मत करो। आज रात्रि को सोते समय अपनी आंखों को हरिनाम की चादर से बांधकर सो जाना, प्रातःकाल उठकर तुम्हें सब कुछ दिखाई देगा। यह सुनते ही बाबा निद्रा से जाग उठे। बालिका की वाणी स्मरण होते ही उसकी रूप छटा उनके हृदय में बैठ गई थी। स्वप्न के अनुसार उन्होंने ऐसा ही किया। अगले दिन सोकर उठे तो अपनी दृष्टि को पूर्ववत् पाया अर्थात् नित्यप्रति भागवत का पाठ पुनः करने लग गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाबा मध्याह्न काल के समय अपनी इष्टदेव श्रीराधा का दर्शन करते हुए 13 जून, 1971 ईसवी को नित्य लीला में प्रविष्ट हो गये। बाबा ने उपदेशों के द्वारा सन्तसेवा, हरिभजन और नाम निष्ठा पर बल दिया। साधकों को बाबा के उपदेशों को कण्ठहार की भांति रखना चाहिए।

जय श्रीराधे !

तपस्वी बाबा

(सूर्यकुण्ड)

तपस्वी बाबा का जन्म वृत्तान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं है। ब्रजवासी और सन्तों से सुना जाता है कि बाबा का जैसा नाम था वैसा काम भी था। बाबा का अखाड़ा गोवर्धन में था। कुछ दिन बाद बाबा ने गोवर्धन से आकर सूर्यकुण्ड में अपना अखाड़ा जमा लिया था। बाबा की लम्बाई आठ फीट बतलाई जाती है। वह जैसे लम्बे थे वैसा ही उनका शरीर चौड़ा भी था। बाबा ने सूर्यकुण्ड में एक गौशाला खोली। गौओं की सेवा करने में उनकी रुचि थी। गौ सेवा करने के लिए वह दूसरों को भी प्रेरणा देते थे। बाबा ने पौष-माघ में विशेष ठण्ड के समय मानसी गंगा में गले तक पानी के अन्दर तीन दिन और तीन रात तक रहकर भजन का अनुष्ठान किया। उसके बाद बाबा अपने आश्रम सूर्यकुण्ड में श्रीचैतन्य तपोवन कुंज राधागोपाल जी के प्राचीन मन्दिर में चारों तरफ अग्नि कुंड बनाकर उसके बीच में बैठकर तप और ध्यान करते थे। बैशाख-ज्येष्ठ की तेज गर्मी में भी इसी तरह तप योग किया करते थे। बाबा ने सूर्यनारायण के मंदिर में लगभग पन्द्रह वर्ष तक सेवा पूजा की। बाबा भजन करते-करते वृद्ध हो गये। सूर्यनारायण मंदिर की सेवा के लिए गांव वाले सिद्धबाबा के मंदिर से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मौनी बाबा को लेकर आये, तो तपस्वी बाबा गोपाल मंदिर में चले गये। वहाँ जाने के कुछ ही दिनों बाद भजन करते करते बाबा ने अपना शरीर छोड़ दिया। उनके अप्रकट होने के बाद कई दिन तक ठाकुर श्री राधागोपाल जी की सेवा बन्द रही। गांव वाले स्वयं मंदिर में आकर सेवा किया करते थे।

उसी समय वृन्दावन से एक गौड़ीय वैष्णव सन्त जो परम पूज्यपाद श्रील भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज के चरणाश्रित श्रीपाद फाल्गुनी सखा ब्रह्मचारी का आगमन हुआ। पन्द्रह वर्ष से वह आज भी सुन्दर ढंग से राधागोपालजी की सेवा कर रहे हैं। फाल्गुनी सखा ब्रह्मचारी का जन्म पश्चिम बंगाल के मैदिनीपुर जिले में हुआ था, सारे भारतवर्ष में भगवद् वाणी का प्रचार करते हुए श्रीधाम वृन्दावन में अपने गुरु आश्रम में रहकर इन्होंने सेवा पूजा और भजन किया। फाल्गुनी सखा ब्रह्मचारी अत्यन्त भजनशील हैं। अपने भजन के बल से वे सूर्यकुण्ड में श्रीचैतन्य तपोवन कुण्ड के अत्यन्त प्राचीन श्रीराधागोपालजी की सेवा अपने प्राणपण से कर रहे हैं। महाराज श्रीफाल्गुनी ब्रह्मचारी अयाची वृत्ति के सन्त हैं, कोई देता है तो ग्रहण कर लेते हैं अन्यथा किसी से भिक्षा नहीं मांगते। फाल्गुनी बाबा बड़े सौम्य स्वभाव के ज्ञानी, चरित्रवान, भजनानन्दी, त्यागी, कृपालु और दर्शनीय सन्त हैं। वह किसी से भयभीत नहीं होते। आज भी वे मन्दिर की सेवा में संलग्न हैं।

जय श्रीराधे !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिद्ध जगन्नाथदास बाबाजी महाराज

(सूर्यकुण्ड)

परमहंस वैष्णव सार्वभौम श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज का जन्म दो सौ पचास वर्ष पूर्व बंगलादेश के टंगाइल जिलान्तर्गत कोनउ ग्राम में उच्च सदाचारी वैष्णव कायस्थ परिवार में हुआ था। श्रील बाबाजी महाराज के परमहंस वेश के गुरु श्रीमधुसूदनदास सिद्ध बाबा हैं। सिद्ध बाबा से वेश लेने के बाद श्रीजगन्नाथदास बाबाजी गौरमंडल, ब्रजमंडल, क्षेत्रमंडल में भजनानन्दी साधुओं में सर्वश्रेष्ठ वैष्णव के रूप में पूज्य थे। बाबा इस धराधाम में 147 वर्ष तक रहे। बाबा ने राधाकुण्ड में श्रीरूपानुग भजन पद्धति के साथ श्रीराधागोविन्द की अष्टकालीय लीला में प्रेम सेवा की है। बाबाजी की अनेक अलौकिक लीलायें हैं।

एक बार एक भागवत पाठक व्यवसायी पंडित द्रव्य लेकर वृन्दावन में पाठ कर रहा था। वह बहुत अभिमानी था। बाबा का दर्शन करते ही उसका अभिमान, पांडित्य और प्रतिष्ठा सब समाप्त हो गई और बाबा के चरणों में वह शरणापन्न होकर उनका नित्य सेवक बन गया। बाबाजी की कृपा से वह सब कुछ छोड़कर वृन्दावनवासी कुत्ता, सूकर, भंगी चाण्डाल, चमार छूत-अछूत सभी को प्रणाम करने लगा। बाबाजी माध्व गौड़ीय वैष्णव थे, वह सभी से प्रार्थना करते थे कि मैं भगवान श्रीराधाकृष्ण का भजन करता रहूँ-ऐसा आप मुझे आशीर्वाद दें। बाबा छह मास वृन्दावन में और छह मास नवद्वीप रहते थे। एक दिन नवद्वीप के बड़े जमींदार गोपीनाथ राय और जानकी राय आदि ने जगन्नाथदास बाबा से पूछा कि-यहां सिद्ध बाबा कौन है? बाबा ने उत्तर दिया-मैं नहीं जानता, जैसे आप हैं वैसा ही मैं हूँ। उन लोगों ने विनयपूर्वक कहा-महाराज आप ही सिद्ध बाबा हो। हमारी बहुत इच्छा है कि आप कुछ सिद्धाई दिखायें। बाबा ने कहा, "मैं क्या जानूँ सिद्धाई

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किसे कहते हैं'' यह कहते हुए सिद्ध बाबा ने एक लाठी लेकर सात आठ बार जमीन पर मारी, यह देखकर वे लोग डरकर भागने लगे। बाबा ने कहा-भइया जाओ मत। मैंने तो व्रज स्थित राधाकुण्ड में गोस्वामी की भजन कुटी में बकरी को मारा था, जो तुलसी के पौधे खा रही थी। यह सुनकर सभी लोग विस्मित हो गये। उसी समय उन लोगों ने 20 रुपये खर्च करके इस घटना की पुष्टि के लिए व्रज में एक जवाबी तार भेजा। उत्तर आया कि श्रीलोकनाथ बाबा के कुंज में एक बकरी ने तुलसी के पौधों को पूरी तरह खा लिया है। उस बकरी के बाल अभी भी वहाँ पड़े हुए हैं। तार का उत्तर पाने के बाद वे लोग पुन: बाबा के पास आये और उनसे हाथ जोड़कर क्षमा मांगते हुए चले गये। सिद्ध बाबा ने कहा ये कलिहत जीव हैं, बिना कुछ देखे विश्वास नहीं करते। इसलिए इन्हें कुछ दिखा दिया। अन्यथा यह अपराध से मर जाते। महापुरुष सिद्धाई दिखाने में रुचि नहीं रखते, किन्तु कलि के जीवों में श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए परिस्थितिवश वह कभी-कभी ऐसी कृपा करते हैं। बाबा का एक सेवक बिहारीदास था वह अनपढ़ और मूढ़ था बाबा ने उसको अपने पास बुलाकर कहा-तुम मेरे पास भागवत लेकर आओ और मेरे सामने उसका पाठ करो। उसने कहा मुझे पढ़ना ही नहीं आता। बाबा ने कहा-पढ़ो तो, उसने पढ़ना शुरु किया, बाबा के आशीर्वाद से उसने पूरी भागवत पढ़ ली। ऐसे सिद्ध महापुरुषों के आशीर्वाद से सब कुछ सम्भव होता है। बाबा ने सूर्यकुण्ड में आकर करीब 40 वर्ष तक भजन किया। एक बार बाबा ने बिहारीदास को आदेश दिया कि किसी अखाड़े में निमन्त्रण खाने मत जाना। निमन्त्रण खाने से बुद्धि बिगड़ती है और भजन की शक्ति कम होती है। साधकों के लिए बाबा ने दो महत्वपूर्ण बातें बतलाई हैं- एक तो परमायु वृद्धि करने की दूसरी भजन सिद्धि करने की। परमायु वृद्धि के लिए वे दिन में दो बार बाहर निकलते थे-

(1) एक बार संध्या से रात 10 बजे तक और प्रात: 3 बजे से सूर्योदय तक। उस समय एक आसन पर बैठकर नाम जप करने से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमायु बढ़ती है, धनवृद्धि होती है और मुक्ति मिलती है।

(2) दूसरा भजन सिद्धि करने के सम्बन्ध में कहते हैं- निरपराध होकर नियमपूर्वक भजन करता है, और निष्काम अन्याभिलाषी होकर यश, प्रतिष्ठा को त्याग कर, साधु वैष्णवों की निन्दा चर्चा छोड़कर सर्वदा निरन्तर नाम करने से भजन में सिद्धि और कृष्णप्रेम उद्दीपन होता है। उसका भजन अवश्य सिद्ध होगा और उनको गौरहरि के पद्मों की प्राप्ति होगी। यह है बाबा का उपदेश।

बाबा वृन्दावन से पदयात्रा करते हुए 10 दिन में गौरमण्डल, नवद्वीप पहुँच गये। नवद्वीप पहुँचकर उन्होंने एक पेड़ के नीचे आसन जमाया। बिहारीदास बाबा ने भक्तिविनोद ठाकुर की सहायता से भिक्षा कर उस स्थान के निकट कुछ जमीन खरीदकर दो कुटियों का निर्माण किया। उसके चारों ओर दीवार खिंचवा दी। जगन्नाथदास बाबा ने 32 साल तक इस स्थान पर रहकर भजन किया है।

उस समय चैतन्यमहाप्रभु का निर्दिष्ट आविर्भाव स्थान किसी को ज्ञात नहीं था। श्रीधाम मायापुर में गंगापार होकर भक्तिविनोद ठाकुर गये। वहां पर महाप्रभु के जन्मस्थान की जमीन पर तुलसी वन खड़ा हुआ था। वह जमीन मुसलमानों की थी। उस जमीन में तुलसी के अतिरिक्त अन्य कोई फसल नहीं थी। उस भूमि पर कोई जानवर जाता तो वह तुरंत मर जाता या चीखकर भाग जाता था। उस जमीन को मालिक ने भूत का स्थान समझकर छोड़ दिया था। भक्तिविनोद ठाकुर के मन में संदेह हुआ कि महाप्रभु का जन्मस्थान यहीं पर हो सकता है। यह बात सोचते हुए वे अपनी कुटिया में आ गये। रात में कुटियाकी छत से गंगा के उस पार देखा तो वहां तुलसी के वन में एक दिव्य ज्योति का दर्शन हुआ। यह सारा वृत्तान्त ठा० भक्ति विनोद ने जगन्नाथदास बाबा को सुनाया। यह सुनकर बाबा झूरी के ऊपर बैठकर वहां आये और नीचे उतरते ही बाबा ऊर्ध्वदण्ड की तरह नृत्य करने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगे। यहीं पर प्रेमावतारी महाप्रभु का अविर्भाव हुआ है- यह बाबाजी महाराज ने उस स्थान का परिचय दिया। हजारों भक्तों को लेकर बाबाजी महाराज ने वहां संकीर्तन किया। तभी से भक्तिविनोद ठा० ने उस जमीन को मुसलमानों से लेकर उस स्थान पर योगपीठ मन्दिर बनाया। चैतन्य महाप्रभु के निर्दिष्ट आविर्भाव स्थान पर प्रतिष्ठा करके बाबाजी महाराज ने 147 वर्ष की आयु में नित्यलीला में प्रवेश किया।

जय श्रीराधे !

नदिया प्रकाश पत्रिका

बंगाब्द 1339 ब्रजदर्शन सन् 1932

विश्व व्यापी श्रीचैतन्य मठ एवं गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता श्रीगौड़ीय सम्प्रदाय के संरक्षक प्रवर नित्यलीला प्रविष्ट जगद्गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद ने श्री ब्रजमण्डल परिक्रमा के समय श्रीसूर्यकुण्ड का दर्शन करने के लिए वहाँ शुभागमन किया।

दिनांक 22.10.1932 में श्रील प्रभुपाद जी ने राधाकुण्ड से प्रात: 6 बजे परिक्रमाकारी भक्तों के साथ सूर्यकुण्ड के लिए यात्रा आरम्भ की। यह सूर्यकुण्ड राधाकुण्ड से 4 मील की दूरी पर स्थित है। श्रील प्रभुपाद ने पदयात्रा के समय मार्ग के अप्राकृत सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार किया है- गाय, मृग, हिरण, बाघ, भालु आदि जानवर और मयूर, कोयल, शुक, कबूतर, सारस आदि पक्षी अपने कलरव से भगवान श्रीराधाकृष्ण का गुण कीर्तन कर रहे थे।

सूर्यकुण्ड में मध्याह्न लीला के समय सूर्य पूजा का वर्णन करते-करते प्रभुपाद में अष्ट सात्विक विकार उपस्थित हो गये। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्तराल के बाद जब वे पूर्वावस्था में आये तब उन्होंने उस रात्रि को जागरण कर सभी भक्तों को भजन-कीर्तन करने का आदेश दिया। वह चिर स्मरणीय दिवस था। प्रातः भक्तों के साथ नाम संकीर्तन करते हुए वे राधाकुण्ड के लिए प्रस्थान कर गये।

श्री हरिनाम

भवसमुद्र बड़ा ही दुस्तर है, परमेश्वर की कृपा के बिना इसको पार करना कठिन ही नहीं असम्भव है, जीव श्रेष्ठ होनेपर भी दुर्बल और पराधीन है। भगवान ही जीवों के एकमात्र रक्षक, पालक और त्राता हैं। परमेश्वर ही जीवों का आश्रय हैं। इस जगत में जीवों की स्थिति ठीक उसी प्रकार की है जिस प्रकार अपराधी व्यक्ति की स्थिति कारागार में होती है। भगवान से विमुख होने के कारण जीव माया के संसार में चक्कर काट रहे हैं। ऐसे जीवों को बद्धजीव कहते हैं। जो जीव भगवान के अनुगत होते हैं, उनको मुक्तजीव कहते हैं।

बद्धजीव साधन भजन द्वारा भगवान की कृपाप्राप्ति कर माया की रज्जू को तोड़ देते हैं। हमारे महर्षियों ने तीन प्रकार के साधन बतलाये हैं-कर्म, ज्ञान और भक्ति। इनमें भक्ति सर्वश्रेष्ठ है, भक्ति के द्वारा ही इस संसार सागर से पार हुआ जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति वर्णाश्रम धर्म का उत्तम रूप से पालन करता है, परन्तु हरिकथा में उसकी रुचि नहीं होती तो उसका सारा धर्मानुष्ठान व्यर्थ का परिश्रम ही हो जाता है। कर्म के द्वारा भवसमुद्र को पार नहीं किया जा सकता।

(1) सतयुग का तारक ब्रह्मनाम-

नारायण परा वेदा नारायण पराक्षरा।
नारायण परामुर्क्ति नारायण परागतिः।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(2) त्रेतायुग का तारक ब्रह्मनाम-

रामनारायणानन्त मुकुन्द मधुसूदन।
कृष्ण केशव कंसारे हरे वैकुण्ठ वामन।।

(3) द्वापरयुग का तारक ब्रह्मनाम-

हरे मुरारे मधुकैटभारे, गोपाल गोविन्द मुकुन्दशौरे।
यज्ञेश नारायण कृष्ण विष्णो, निराश्रयं मां जगदीश रक्षा।।

(4) कलियुग का तारक ब्रह्मनाम-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

-कलि सन्तरण उपनिषद

भगवान को प्रसन्न करने के लिए भक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है। साधन भक्ति नौ प्रकार की होती है-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन। इनमें से श्रवण, कीर्तन और स्मरण-ये तीन प्रधान अंग हैं। भगवान के नाम, रूप, गुण और लीला-इन चारों विषयों का श्रवण, कीर्तन और स्मरण होता है। इनमें ही श्रीनाम ही आदि और सर्वबीज स्वरूप है। अत: हरिनाम ही सब प्रकार की उपासनाओं का मूल है। शास्त्रों में कहते हैं-

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।

कलियुग में हरिनाम के अतिरिक्त जीवों की अन्य गति नहीं है। कलियुग में हरिनाम का ही अवलम्बन करना उचित है। हरिनाम के सम्बन्ध में पद्मपुराणमें इस प्रकार उल्लिखित है-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाम चिन्तामणि कृष्णश्चैतन्यरसविग्रहः।
पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नत्वान्नामनामिनोः।।

कृष्णनाम चिन्तामणि स्वरूप, कृष्ण स्वरूप और चैतन्यस्वरूप है। नाम सर्वदा पूर्णस्वरूप है। अर्थात् उनमें विभक्तियों के योग से "कृष्णाय नारायणाय" इत्यादि मंत्रों के निर्माण की अपेक्षा नहीं होती। नाम चैतन्यरस मात्र है। नाम सदा मुक्त होते हैं, अतः नित्यमुक्त हैं। वे कभी जड़ जिह्वा आदि से उत्पन्न नहीं होते। जिन्होंने नाम रस का पान किया है वे ही इसकी महिमा को समझते हैं। प्राकृत रसना से कृष्णनाम उत्पन्न नहीं होता। साधनकाल में जिस नाम का अभ्यास किया जाता है वह यथार्थ नाम नहीं है, उसे नामाभास कहा जा सकता है। नामाभास करते-करते अप्राकृत नाम में रुचि होती है। वाल्मीकि और अजामिल के जीवन चरित्र इस विषय में ज्वलंत दृष्टांत हैं।

जीव की नाम में रुचि न होने का कारण अपराध है। जो अपराध रहित होकर कृष्णनाम ग्रहण करते हैं उनके हृदय में अप्राकृत श्रीहरिनाम का उदय होता है। हृदय प्रफुल्लित हो उठता है, नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है तथा शरीर में सात्विक विकार पैदा होने लगते हैं। जिनमें ऐसे विकार लक्षित नहीं होते, उनका हृदय अपराध के कारण अतिशय कठोर हो चुका है-ऐसा समझना चाहिए।

निरपराध होकर हरिनाम लेना साधक का कर्तव्य है। अपराध दस प्रकार के होते हैं। इसका ज्ञान साधक को अवश्य होना चाहिए। (1) साधु निन्दा (2) शिव आदि देवताओं को भगवान से पृथक् स्वतन्त्र मानना (3) गुरु की अवज्ञा करना (4) शास्त्रों की निन्दा करना (5) हरिनाम माहात्म्य को केवल मात्र प्रशंसा समझना (6) हरिनाम में अर्थ कल्पना करना (7) नाम के बल पर पाप करना (8) अन्यान्य शुभकर्मों के साथ हरिनाम को समान समझना (9) अश्रद्धालु व्यक्ति को हरिनाम देना (10) नाम का माहात्म्य समझकर भी उसके प्रति अविश्वास रखना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस प्रकार नामापराध वर्जन नहीं करने से हरिनाम उदित नहीं होते। कलियुग पावनावतारी चैतन्य महाप्रभु ने संसारी जीवों के दुःखों को देखकर ऐसा उपदेश दिया है-

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।

अपने को तृण से भी तुच्छ मानकर, वृक्ष से भी अधिक सहिष्णु होकर स्वयं अभिमान शून्य होकर दूसरों को मान देकर जीव हरिनाम संकीर्तन में अधिकार प्राप्त करता है। जो अपने को सबसे अधिक दीनहीन समझते हैं, वे कभी भी साधु निन्दा, देवताओं की अवज्ञा, गुरु अवज्ञा, शास्त्रों की निन्दा नहीं करते। और न ही नाम के बल पर पाप कर्म करते हैं और नाम के प्रति तनिक भी अविश्वास नहीं रखते। वे स्वभावतः दस प्रकार के नामापराधों से दूर रहने की चेष्टा करते हैं।

इसलिए जीव को सद्गुरु का पदाश्रय ग्रहण करके सब समय महामंत्र का जप और कीर्तन करना चाहिए-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

एकादशी व्रत : तत्त्व विचार

एकादशी व्रत के विषय में जानना अत्यन्त आवश्यक है। विषय ज्ञान न होने से किसी को एकादशी के प्रति आदर और प्रीति नहीं होती है। एकादशी व्रत साक्षात श्रीभगवान का ही व्रत है। एकादशी तिथि भक्ति की जननी है। इसलिए अन्य तिथियों से एकादशी तिथि भगवान को अत्यन्त प्रिय है। एकादशी व्रत करने से भगवान अत्यन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसन्न होते हैं। आत्मा की खुराक के लिए एकादशी व्रत करना जीव मात्र का कर्तव्य है। कात्यायन स्मृति में कहा गया है कि -

धर्महि तेषाम् अधिक: विशेष: धर्म विहीना: पशुभि: समाना।

धर्म का आचरण करने वाला श्रेष्ठ है। अधर्म करने से वह पशु के समान है। हरि-गुरु-वैष्णवों के वचन मानते हुए एकादशी व्रत करने के साथ-साथ कलियुग की महौषधि का सेवन अर्थात्-हरिनाम श्रवण कीर्तन करना अति आवश्यक है।

दशमी विद्धा एकादशी को व्रत करना भी उचित नहीं है। दशमी विद्धा एकादशी का उपवास करने से वर्षों का संचित पुण्य नष्ट हो जाता है और परमायु नष्ट होती है तथा धर्म नष्ट होता है। स्वयं, पुत्र व कन्या विनष्ट होते हैं।

एकादशी के दिन उपवास करके झूँठ बोलना, दिन में सोना, स्त्री संग करना, जुआ खेलना, पान तम्बाकू, चाय आदि का सेवन करना, लड़ाई झगड़ा करना, बार-बार पानी पीना यह सब नहीं करना चाहिए, अन्यथा व्रत का फल नष्ट हो जाता है।

एकादशी व्रत आठ वर्ष से अस्सी वर्ष की आयु तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री (सधवा और विधवा) जहाँ तक हो सके सोबर, रजस्वला (एम.सी.) अवधि में भी एकादशी व्रत करना चाहिए। इससे संसार से मुक्तिलाभ करके वह वैकुण्ठ में जाता है। पद्म पुराण के अनुसार जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न का भोजन करता है, वह पशुओं से भी नीच होता है। बृहन्नारदीय पुराण के अनुसार जाने अनजाने में जो मनुष्य अन्न का भोजन करता है उसको प्रत्येक अन्न के ग्रास के साथ पाप दोष लगता है। जैसे ब्रह्म हत्या का और गौ हत्या का पाप लगता है। हरिभक्ति विलास के अनुसार एकादशी के दिन अन्न का भोजन करने से गाय का मांस खाने का पाप लगता है। स्कन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुराण के अनुसार एकादशी के दिन भोजन करने से मातृहत्या, पितृहत्या, गुरु हत्या का पाप लगता है।

कलियुग में मनुष्य दोषों से घिरा हुआ है। इसका एकमात्र सहज और सरल उपाय यही है कि हरिनाम और एकादशी का व्रत किया जाये। अनेक लोग भूख के कच्चे होते हैं, वे भूख को सहन नहीं कर सकते। इसलिए एकादशी वाले दिन एक दो बार फल आहार करके भी एकादशी व्रत का पालन करना चाहिए। बहुत से लोगों की मान्यता है कि एकादशी व्रत का उद्यापन करना बहुत आवश्यक होता है। इस कारण बहुत से लोग एकादशी रखने में असमर्थता व्यक्त करते हैं। जबकि निष्काम भाव से एकादशी व्रत करने से उद्यापन करने की आवश्यकता नहीं होती है। एकादशी व्रत के साथ-साथ अगले दिन ठीक समय पर व्रत का पारण करके व्रत खोलना अत्यन्त आवश्यक होता है।

एकादशी पारण के नियम

यदि निर्जला एकादशी व्रत रखा हो तो चरणामृत द्वारा पारण अथवा अन्न द्वारा पारण करें। समय पर पारण करने से ही एकादशी का व्रत सम्पूर्ण माना जाता है। महाद्वादशी का व्रत उपस्थित होने पर एकादशी का त्याग कर महाद्वादशी का एकादशी जैसा ही पालन किया जाता है।

आजकल रजस्वला अथवा मासिक धर्म अवस्था की उपेक्षा हो रही है, जो कि पतन का साक्षात कारण है। चूंकि रजस्वला अवस्था साक्षात ब्रह्महत्या का पाप है। इन्द्र से जब ब्राह्मण पुत्र विश्वरूप की हत्या हो गई, उस समय ब्रह्महत्या साक्षात भयंकर रूप धारण कर उसके पीछे धावित हुई। उस समय ब्रह्मा आदि देवताओं के कहने पर इन्द्र ने उस ब्रह्म हत्या के पाप को चार स्थानों में बांट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिया था, उन्हीं में से उस ब्रह्महत्या के पाप के एक अंश को स्त्री ने ग्रहण किया जो रजस्वला के रूप में प्रकाशित होता है। अतः शास्त्रों के अनुसार पांच दिन तक रजस्वला स्त्री भगवान और तुलसी की तो बात ही क्या? घर में सर्वत्र छुआछूत का विचार करना चाहिए। इस अवस्था में एकादशी व्रत और हरिनाम करने में कोई दोष नहीं है। यदि छुआछूत का विचार न किया जाये तो उससे चित्त अवश्य ही मलिन हो जाता है। इसके फलस्वरूप मेरा आत्मकल्याण किस में है? यह ज्ञान भी लुप्त हो जाता है।

एकादशी में खाद्य पदार्थ

कन्दमूल, फल, दही, दुग्ध, छैना, पनीर, घृत, कूटू का आटा, सिंगाड़े का आटा, मिश्री आदि फलाहार के अन्तर्गत आते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती पाठ गा० प्रभुपाद के उपदेश

* केवल आचार-रहित प्रचार कर्म-अंग के अन्तर्गत है। परस्वभाव की निंदा न कर आत्म-संशोधन करना चाहिए; यही मेरा उपदेश है।

* माथुर-विरह-कातर ब्रजवासियों की सेवा करना ही हमारा परम धर्म है।

* पशु, पक्षी, कीट, पतंग प्रभृति लक्ष-लक्ष योनियों में रहना अच्छा है, तथापि कपटताका आश्रय करना उचित नहीं, निष्कपट व्यक्ति का मंगल होता है।

* सरलता का नामान्तर ही वैष्णवता है। परमहंस वैष्णवों के दास सरल होते हैं; इसलिए वे ही सर्वोत्कृष्ट ब्राह्मण हैं।

* जीवों की विपरित रुचि को परिवर्तन करना ही सर्वश्रेष्ठ दयालुता का परिचय है। महामायः के दुर्ग के बीच से यदि एक जीव की भी रक्षा कर सको, तो अनन्त कोटि अस्पतालों के निर्माण की अपेक्षा उसमें अनन्तगुना परोपकार का कार्य होगा।

* हम इस जगत में अधिक दिन नहीं रहेंगे, हरिकीर्तन करते-करते हमारा देहपात होने से ही इस देह धारण की सार्थकता है।

* श्रीचैतन्यदेव के मनोऽभीष्ट-संस्थापक श्रीरूप गोस्वामी के पादपद्म की धूल ही हमारे जीवन की एकमात्र आकांक्षा की वस्तु है।

* निर्गुण वस्तु का दर्शन करने के लिए कोई भी दूसरा पथ नहीं-एकमात्र कान को छोड़कर।

* जहाँ हरिकथा होती है, वहीं तीर्थ है।

* कीर्तन के माध्यम से श्रवण होता है और स्मरण का सुयोग प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होता है। उसी समय अष्टकालीय-लीला-सेवा की अनुभूति सम्भव है।

* श्रीकृष्ण-नामोच्चारण को ही भक्ति समझना चाहिए।

* जो प्रतिदिन लक्ष हरिनाम नहीं ग्रहण करते, उनकी दी हुई कोई वस्तु भगवान ग्रहण नहीं करते।

* अपराधों से दूर रहकर श्रीहरिनाम ग्रहण की इच्छा कर निरन्तर हरिनाम करते रहने से अपराध दूर होंगे और शुद्ध हरिनाम उदित होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोवर्धन मुख्य

Goverdhan Main

मथुरा से गोवर्धन 20 कि.मी. वाया मथुरा से डीग मार्ग 14 कि.मी. वाया मथुरा से डीग मार्ग 22 कि.मी. वाया मथुरा से डीग मार्ग 21 कि.मी. वाया मथुरा से डीग मार्ग 5 कि.मी. वाया मथुरा से डीग मार्ग 20 कि.मी.

Goverdhan 20 Km. from Mathura via Deeg Road 14 Km. via Deeg Road 22 Km. via Deeg Road 21 Km. via Deeg Road 5 Km. via Deeg Road 20 Km.